

20/03/2019

भाषा [Language]

भाषा विकास

- जन्म के समय बालक न तो सामाजिक है न ही असामाजिक
- जन्म के समय बालक में केवल उत्तेजना होती है
- जन्म के बाद बालक रुदन करता है अर्थात् किन्हीं
- जन्म के बाद से ही बालक में व्यक्तित्व गिनती आ
- प्रारम्भ हो जाता है
- धीरे धीरे बालक बोल बोलता है अर्थात् माँ पापा
- अदि शब्दों का प्रयोग करता है
- कम बोलने के द्वारा बालक अपने भाव व्यक्त
- विचारों को व्यक्त करना चाहता है
- भारी यह प्रश्न किया जाए कि अति प्रारम्भिक
- अवस्था में बालक के मातृभाषा का विकास अथवा
- भाषा का विकास स्मृति के द्वारा होता है अथवा समझ
- के द्वारा होता है तो इसके उत्तर में यही कहा जाएगा
- कि स्मृति के द्वारा प्रारम्भिक अवस्था में बालक
- की भाषा का विकास होता है (समझ के द्वारा नहीं होता)
- उदा० के लिए जब किसी व्यक्ति का चेहरा बालक के
- सामने आता है और उसे सम्बोधित करते हुए "पापा"
- शब्द का प्रयोग किया जाता है और इस प्रकार
- यह प्रक्रिया दोहरा जाती है तो बालक के मन में स्मृति
- में स्मृति के रूप में वह चेहरा बँठ जाता है अर्थात्
- हम कह सकते हैं कि प्रारम्भिक अवस्था में भाषा का
- विकास स्मृति से होता है

Q. किसी बालक की मातृभाषा और पहली भाषा क्या

होगी क्या?

प्रश्न से आरु बालक पिता जो इस हावाद में रहते हैं

तो उनकी भाषा अलग होगी मातृभाषा उसकी

बंगाली होगी पहली भाषा हिन्दी होगी

* लक्ष्यता के तहत किसी निश्चित रूप रेखा पर होना या न होना सुनिश्चित किया जाता है
- जैसे - यदि हम पढ़ने का कौशल का मूल्यांकन कर रहे हैं तो साध में लिखना कौशल का भी मूल्यांकन करने लगे तो ऐसा मूल्यांकन अवैध होगा। क्योंकि वैध मूल्यांकन निश्चित उद्देश्यों की व्याख्या करता है।

मापन :- बालक के दुरुपयोग में परिवर्तन का मातात्मक अथवा अकात्मक स्पर्शकरण दिया जाए तो इसे ही मापन कहते हैं।

* इसके द्वारा बालक के व्यवहारगत स्वभाव, क्षमताओं, विभिन्नताओं व व्यवहार में दुरुपयोग में परिवर्तन का मापन किया जाता है।

* मापन की क्रिया को अच्छी परीक्षा के माध्यम से ही सम्पन्न कराया जा सकता है।

* मापन के लिए अति, लघु, विस्तृत कुलरीय तथा निरन्ध्यात्मक प्रकार के प्रश्न अधिक उपयोगी होते हैं। बहुविकल्पीय प्रश्न सबसे कम महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि यहाँ विवक्षणीयता की कमी होती है।

किसी बालक की मातृ भाषा तथा प्रथम भाषा एक हो सकती है। किसी बालक की मातृ भाषा अथवा प्रथम भाषा अलग-अलग हो सकती है। उदा. यदि पंजाब राज में जंगल से आरु माता पिता की संतान जिसका जन्म पंजाब राज से हुआ उसकी मातृ भाषा अथवा प्रथम भाषा हिन्दी होगी क्योंकि वक्तावरण में हिन्दी बोली जाती है।

लेकिन पंजाब राज में ही रह रहे माता पिता से उत्पन्न बालक की मातृ भाषा तथा प्रथम भाषा हिन्दी ही होगी।

⇒ यदि कोई बालक ऐसे परिवार में रहता है जहाँ अंग्रेजी बोली है व पिता हिन्दी बोलते हैं अथवा माता हिन्दी बोलती है परिवार है; ऐसी स्थिति में बालक के भाषा विकास की गति बंद होगी क्योंकि बालक प्रभावित हो जाएगा Ex. Papi & Waver में प्रभावित हो जाएगा (पानी)

⇒ यदि किसी परिवार में जुड़ा बालक है अथवा दो भाई-बहन से अधिक भाषा न आने वाले बालक हैं तो ऐसे बालक की भाषा विकास की गति बंद होगी क्योंकि वह दूसरे का अनुकरण करेगा और उन सभी को भाषा का ज्ञान नहीं है।

अर्थात् हमें यह समझना है कि भाषा का विकास साक्षिक वक्तावरण से होता है।

Q. प्रश्न यह पूछता है कि भाषा जन्मजात है या नहीं?

Ans. इसके उत्तर में यही कहा जाएगा कि भाषा जन्मजात नहीं होती है।

⇒ "बालक के अन्दर भाषा सीखने की जन्मजात शक्ति होती है।" (Noam Chomsky)

⇒ Inborn }
Innate } जन्मजात

⇒ भाषा अर्जन जन्मजात है (Noam Chomsky)
(Noam Chomsky)

⇒ अर्थात् बालक भाषायी वातावरण से भाषा अर्जन करता है अपौर भाषा ग्रहण करता है।

⇒ 0-9 महीने तक बालक सांकेतिक भाषा का प्रयोग करता है। जिसे असांकेतिक भाषा भी कहते हैं। अर्थात् बालक की प्रारम्भिक भाषा सांकेतिक भाषा है।

⇒ भाव अथवा विचारों को व्यक्त करने का माध्यम ही भाषा है। भाषा मौखिक अथवा लिखित हो सकती है।

⇒ लिखित भाषा अन्तिम इकाई नहीं है। जबकि मौखिक भाषा की अन्तिम इकाई ध्वनि है।

⇒ अब प्रश्न यह उठता है कि पशु पक्षियों तथा जानवरों के द्वारा बोली जाने वाली ध्वनियों भाषा है अथवा नहीं। तो इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि पशु पक्षियों तथा जानवरों की ध्वनियाँ भाषा नहीं हैं।

⇒ भाषा वह होती है जिसकी अपनी एक लिपि हो और जिसे लिखित रूप में स्पष्ट किया जा सकता हो।

भाषा अर्जन

भाषा अर्जन भाषा अधिगम

भाषा अर्जन (भाषा सीखने की क्षमता)

भाषा अधिगम (भाषा सीखना)

- ⇒ यह एक प्रक्रिया है।
- ⇒ यह स्वतंत्र रूप से होता है।
- ⇒ यह सहज होता है।
- ⇒ यह स्वाभाविक है।
- ⇒ अध्यात्मिक लक्षित होता है।
- ⇒ यह मुक्त होता है।
- ⇒ यह अभ्यासरहित है।
- ⇒ यह उद्देश्यरहित होता है।
- ⇒ यह अनौपचारिक होता है।

- ⇒ यह एक पद्धति है।
- ⇒ यह प्रशिक्षण युक्त है।
- ⇒ यह नियम बद्ध है।
- ⇒ यह व्यवहारिक रूपरेखा को स्पष्ट करता है।
- ⇒ यह लक्षित होता है और लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है।
- ⇒ यह विशेष वातावरण में होता है।
- ⇒ यह अभ्यास युक्त है (सीमा 11)
- ⇒ यह उद्देश्यपूर्ण होता है।
- ⇒ यह औपचारिक होता है।

भाषा अर्जन और भाषा अधिगम में मूल अन्तर है -
उपलब्ध वातावरण अलग है।

⇒ Note :- अध्यास एवं प्रशिक्षण से किया गया व्यवहार
अथवा ज्ञान में परिवर्तन ही भाषा अधिगम है भाषा
अधिगम का सीखा सम्बन्ध भाषा सीखने से है यह
उद्देश्य पूर्ण होता है यह औपचारिक होता है तथा विविध
वातावरण में होता है -

भाषा अधिगम में तुरंत होता है उन तुरंत उद्देश्य
करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है भाषा अर्जन
भाषा अधिगम दोनों ही स्थितियों में संस्कृति
लगभग वही रहता है।

Imp भाषा अधिगम और भाषा अर्जन में मूल आधार में
अन्तर नहीं है - संस्कृति (Culture)

भाषा अर्जन :- भाषा अर्जन सहज व स्वाभाविक होता है
यह भाषा सीखने की श्रमता विस्तार से सम्बन्धित है
अर्थात् यह प्रश्न कि भाषा अर्जन के
Imp परिमार्थान वालक भाषा को आत्मसात कर लेता है
तो यह कथन गलत होगा।

Imp - भाषा अर्जन के समय बालक भाषा को आत्मसात
नहीं करता है (उदा० मम, मम बोलने पर वह
पानी नहीं बोलता है।)

अब बालक पानी के लिए Mummy शब्द का प्रयोग
करता है तथा किसी के द्वारा पानी बोलने हेतु
निर्दिष्ट किया जाता है तो ऐसे भाषा अर्जन के
परिमार्थान वालक भाषा को आत्मसात नहीं करता
है अर्थात् Mummy शब्द का ही प्रयोग करता है और
अगर वह दो बारा पानी बोल भी दिया तो उसे
सीखा ही ज्ञान जाता है अर्थात् बालक भाषा अर्जन
के समय उस शब्द को आत्मसात नहीं करता है।

भाषा विकास एवं विचारक :

* स्किनर :- बालक के भाषा का विकास चयनात्मक पुनीवसन (Selective reinforcement) के द्वारा होता है।
इनके अनुसार - जब बालक किसी शब्द का प्रयोग करता है या कोई क्रिया विधि करता है तो उस बालक को यदि सबकासी दी जाए तालिया आदि बजाकर अथवा बालक के समक्ष सकारात्मक व्यवहार किया जाए तो बालक पुनीवसित होता है। और पूर्व में प्रयोग किया गए शब्दों का चयन बार-बार करने लगता है।

* पावसाव के अनुसार :- बालक अनुकरण के द्वारा सीखते हैं ध्यान रखने वाला मुख्य यह भी है कि बालक में भाषा का सर्वाधिक विकास अनुकरण से ही होता है।

* कोह्लर के अनुसार :- वे सूझ का सिद्धान्त दिया। जब बालक को कुत्ते से अवगत कराया जाता है, बिल्ली से अवगत कराया जाता है तो उसी क्रम में जब बालक एक बड़ा जानवर जगमगा जैसे देखता है तो उसका सूझ यही कहता है कि यह तो कुत्ता है न तो बिल्ली है परन्तु कुछ अन्य भी कहने का

* नोम चोमस्की के अनुसार :- भाषा अर्जन जन्म जात है।
Norm Chomsky ने कहा कि बालक में भाषा सिखने की क्षमता जन्म जात होती है।
"In born capacity to language acquire!"

Norm Chomsky :- वे भाषा अर्जन का सिद्धान्त दिया।

⇒ इनके अनुसार बालक में LAD (Language Acquisition Device)

बालक के अन्दर भाषा अर्जन घट होता है तथा उस वाक्यों का निर्माण करने लगता है।

सतही संरचना → गहरी संरचना
भाव का विचार

Note:-

- * Norm Chomski भाषा अधिगम की बात नहीं करता है।
- * LAD के द्वारा नॉम चोमस्की ने गहरी संरचना तथा सतही संरचना की गणना की उत्पत्ति की।
- * गहरी संरचना से बालक भाव व विचारों को व्यक्त करता है जबकि सतही संरचना से वाक्यों एवं वाद्यों का निर्माण करता है।
- * Norm Chomski महोदय ने सार्वभौमिक भाषा का सिद्धान्त दिया (Universal language theory)
- * Norm Chomski के अनुसार बालक के अन्दर ऐसी क्षमताएं होती हैं कि वह सार्वभौमिक रूप से लक्ष्यों को ग्रहण करने लगता है।
- * Norm Chomski के अनुसार बालक व्याकरण के नियमों व लक्ष्यों को अपने वातावरण से सीख लेता है। (The child learn even the rules of grammar)
- * Norm Chomski ने विद्यालय रहित, भाषा रहित शिक्षण पर जोर दिया। अनौपचारिक शिक्षा पर जोर दिया।

Question:-

Norm Chomski के अनुसार बालक के भाषा का विकास निम्न में से किसके द्वारा नहीं होता है।

(A) शिक्षण रहित व्यवस्था द्वारा

(B) अभ्यास रहित व्यवस्था द्वारा

(C) अनौपचारिक " "

(D) विद्यालयी " "

Ans → (D)

* वाइगोत्स्की *

Note -

समाजिक आविगम का सिद्धान्त - वन्दना

→ समाजिक विकास का सिद्धान्त (Social Development Theory)

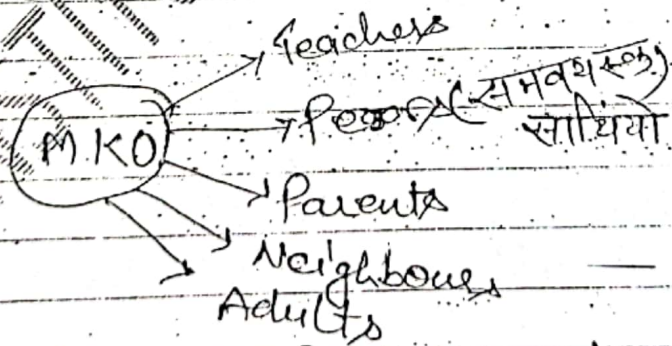
→ समाजिक अन्तः क्रिया का सिद्धान्त (Social Interaction Theory)

→ समाजिक सांस्कृतिक विकास का सिद्धान्त (Social Cultural Theory)

→ समाजिक संज्ञानात्मक विकास का सिद्धान्त (Social Cognitive Development Theory)

वाइगोत्स्की प्रत्येक के अनुसार बालक अपने समवयस्कों के साथ अन्तः क्रिया करके सीखते हैं।

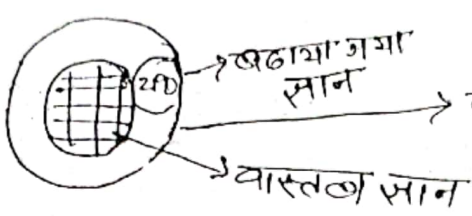
* वाइगोत्स्की प्रत्येक के अनुसार M.K.O (More knowledgeable others) का सिद्धान्त दिया। (अधिक ज्ञानवान् अन्य)



बालक सर्वाधिक अपने समवयस्कों से सीखते हैं।

* M.K.O. से तात्पर्य अधिक ज्ञानवान् अन्य से है अर्थात् बालक उनसे सीखते हैं जो अधिक ज्ञानवान् हैं।

* ZPD (Zone of proximal development) नमदीकी विकास का क्षेत्र :-



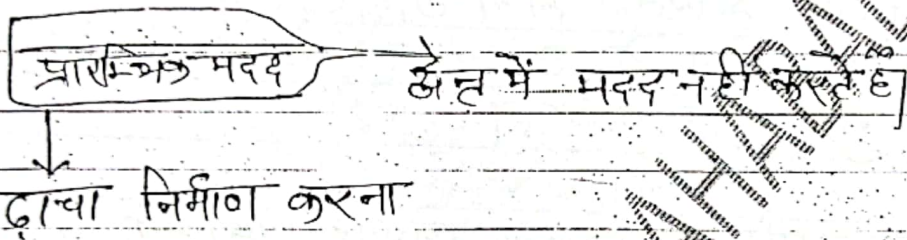
→ बढ़ाये की मदद में 2PD होगा।

Note - बच्चे को मदद में सहयोग होगा।

बालक के वास्तविक ज्ञान तथा उसके बढ़ाये गये ज्ञान के बीच के अंतर को ही 2PD कहते हैं।

* 2PD में प्रारम्भिक मदद नहीं दी जाती है।

* स्केफोल्डिंग (Scaffolding) का निर्माण:-



* किसी कार्य के संदर्भ में जब बालक को प्रारम्भिक मदद दी जाती है तो इसे ही काया निर्माण कहते हैं।

* स्केफोल्डिंग अस्थायी होता है क्योंकि एक निश्चित समय के बाद मदद देना बन्द कर दिया जाता है।

Note :- बालक का हाथ पकड़ कर चलना सीखाना, बालक को साइकिल चलाना सीखाना, आदि। स्केफोल्डिंग के ही उदा० हैं।

रिस्कनर

रिस्कनर महोदय ने - चयनात्मक पुनर्वसन (Selective reinforcement) पर ध्यान दिया।

बालक जब किसी कार्य को करता है तो यदि उस कार्य के लिए तालिका बजाकर या किसी अन्य पदार्थ से प्रोत्साहित किया जाता है तो बालक उस क्रिया को दोहराने के लिए प्रेरित होता है। अर्थात् बालक पहले प्रयोग किए गए शब्दों का चयन कर लेता है। इसे ही चयनात्मक पुनर्वसन कहते हैं।

Q. किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार बालक में सर्वाधिक भाषा का अ. पुनर्वसन से होता है?

Ans - रिस्कनर

* भाषा - विकास के क्रम :-

- 1) अनुकरण (Imitation) (मम्मी के पास जाना)
- 2) सादृश्यता (Association) (कामा शब्द और वस्तु)
- 3) पुनर्वसन (Reinforcement) (बार-बार दोहराना)

भाषा विकास में ये तीनों सम्मिलित हैं।
इसमें सर्वाधिक ध्यान - पुनर्वसन पर दिया।

पावलोव

* Classical Conditioning / का सिद्धान्त - पावलोव

* Operant Conditioning का सिद्धान्त - स्किनर
(क्रिया-प्रसृत अनुबन्धन का सिद्धान्त)

* अनुकरण का सिद्धान्त पावलोव ने दिया।

भाषा शिक्षण सूत्र

* भाषा शिक्षण सूत्रों का उपयोग करके अध्यापक भाषा अधिगम को प्रभावशाली - बनाते हैं।

* भाषा शिक्षण सूत्रों के सन्दर्भ में सबसे महत्वपूर्ण नाम हरबर्ट स्पेन्सर का है।

* मूर्त से अमूर्त की ओर :- एक बालक को सबसे पहले गुलाब का फूल दिखाया जाता है तत्पश्चात् उसके सुगन्ध व अन्य विशेषताओं को बतलाया जाता है (मूर्त से अमूर्त की ओर)।
इसे दृश्य से अदृश्य की ओर भी कह सकते हैं।

* ज्ञात से अज्ञात की ओर :- एक पैन का मूल्य 5/- रुपये है तो 10 पैन का मूल्य क्या होगा ? उपर्युक्त उदा० ज्ञात से अज्ञात की ओर शिक्षण सूत्र को स्पष्ट करता है।

* सरल से कठिन की ओर :- एक अध्यापक सर्वप्रथम वर्ण शब्द, वाक्य, मिश्रित वाक्य आदि को क्रमशः बतलाते हैं वह किस शिक्षण सूत्र का अनुकरण कर रहा है ? (सरल से कठिन)

* पूर्ण से अंश की ओर :- एक अध्यापक सर्वप्रथम पूरे शरीर के चित्र को दिखाता है तत्पश्चात् शरीर के एक-एक अंग का चित्र दिखाता है और इनके बारे में दिखाता यह शिक्षण ? (पूर्ण से अंश की ओर)

* विश्लेषण से संश्लेषण की ओर:- एक अध्यापक किसी कहानी को कई भागों में बतलाता है तत्पश्चात् उस कहानी का सारांश बतलाता है यह किस विज्ञान सूत्र को स्पष्ट कर रहा है (विश्लेषण से संश्लेषण की ओर) कई विकल्पों से उत्तर की ओर जाना ही विश्लेषण से संश्लेषण की ओर आने के आव को दर्शाता है।

* कृत्रिम से वास्तविक जीवन की ओर:- पाठ्य पुस्तक से प्राप्त ज्ञान को अपने भाव विचारों में व्यक्त करना यह कृत्रिम से वास्तविक विज्ञान सूत्र को व्यक्त कर रहा है।

* मनोवैज्ञानिकता से तर्क की ओर:- इसे ही अनुभव से तर्क की ओर जाना अनुभव से सिद्धान्त की ओर जाना संकल्पना से तर्क की ओर जाना है मनोविज्ञान से तर्क की ओर जाना कहते हैं।

* विशेष से सामान्य की ओर:- एक अध्यापक सर्वप्रथम उसके सामान्य मिथुन को बतलाता है अर्थात् सामान्य छुड़ता है यह किस विज्ञान सूत्र को स्पष्ट करता है (विशेष से सामान्य की ओर)

Note- इसे आगमन से निगमन की ओर भी कहते हैं।

* अनिश्चित से निश्चित की ओर:- बातों को इस स्थिति में लाना चाहिए की जिस हलधियों को ले कर हात अनिश्चय है अपना समझने में असमर्थ है उनके सन्दर्भ में ही सरलतम ढंग से विज्ञान करते हुए उन्हें समझा दिया जाय अर्थात् निश्चित कर दिया जाय।

भाषागत दोष

* भाषा के प्रयोग के दरमियान जब स्वर गलती अथवा तलव्य, मूर्च्छा, कण्ठ आदि का सही प्रयोग नहीं किया जाता है तब भाषा में दोष उत्पन्न हो जाता है इसे ही भाषागत दोष कहते हैं।

* यह दोष जन्मजात हो सकता है अथवा वातावरण से प्राप्त हो सकता है।

* जब भाषागत दोष वातावरण से प्राप्त होता है तो ऐसे दोष को पूर्णतः दूर किया जा सकता है।

* लेकिन जब भाषागत दोष जन्मजात होता है तो इसके द्वारा जीवन घटित होने रहते हैं।

* भाषा के निम्नलिखित दोष :-

(1) वर्ण विपर्यय दोष :- एक बालक मेहनत को मेनहल कोलता है मजदब को महजब कोलता है मलदब को मलतब कोलता है तो इन उदाहरणों में दोष है। (वर्ण विपर्यय दोष)

(2) शब्द विपर्यय दोष :- बालों ने अध्यापक को पढ़ाया इस उदा० में दोष है। (शब्द विपर्यय दोष)

(3) स्वरलोप दोष :- एक बालक चाचा को च्या कहता है या दादा को दा कहता है इस उदा० में दोष है। (स्वरलोप दोष)

④ व्यंजन लोप दोष:- एक बालक कालिय को तब लिखता है उमल को उम बोलता है वह किस प्रकार का दोष कर रहा है? (व्यंजन लोप दोष)

⑤ स्वरागम दोष:- एक बालक स्कूल को सिक्ल बोलता है तथा स्टूल अस्टूल बोलता है खान को अखान बोलता है (इस स्वरागम दोष)

⑥ स्वरभ्रंश दोष:- एक बालक राजेन्द्र को राजेन्दर तथा महेन्द्र को महेन्दर बोलता है इन उदा० में दोष है? (स्वरभ्रंश दोष)

⑦ अनुनासिक दोष:- (मुख + नाक) एक बालक भाग को भाग बोलता है मध को हाध बोलता है इस उदा० में किस प्रकार का दोष है? (अनुनासिक दोष)

⑧ अगुनासिक दोष:- एक बालक पवन को पवैन बोलता है इस उदा० में दोष है? (अगुनासिक दोष)

⑨ मथल लाव्य दोष:- एक बालक मास्टर साहब को मासाहब बोलता है डॉक्टर साहब को डासाहब बोलता है वह किस प्रकार का दोष कर रहा है? (मथल लाव्य बोलने में जल्दबाजी)

⑩ महाप्राण दोष:- एक बालक धर को धर बोलता है भजन को वजन बोल रहा है वह किस प्रकार का दोष कर रहा है? (महाप्राण दोष)

क ख ग घ ङ

ये दोषों ज्यादा वायु दे रहे
इसलिए (महाप्राण वर्ण) हैं

(11) अप्रमाण सम्बंधी दोष:- एक बालक जोर को दोष
धारता है तथा चम्मच को
दम्मच धारता है वह किस प्रकार का दोष करता है
(अप्रमाण सम्बंधी दोष) (1, 3, 5 वीं अप्रमाण होता है)

* भाषा की कक्षा व शिक्षक की भूमिका *

(बहुभाषिक, बहुसांस्कृतिक समावेशी कक्षा)

* भाषा की कक्षा बहुभाषिक

* जब बालक अपने परिवार विद्यालय जाता है तो बालक
उम्र लगभग 3-4 वर्ष की होती है।

बालक को चारों कोरालों का आंशिक ज्ञान
हो चुका होता है।

* अध्यापक द्वारा के इस आंशिक ज्ञान को भाषा
विकास के संदर्भ में संसाधन के रूप में प्रयोग
करते हुए बालक के भाषा विकास के क्रम को
आगे बढ़ाता है

* बालक का यह आंशिक ज्ञान उसकी पारम्भिक
भाषा ही होती है कभी-कभी ऐसे दान वि
में आते हैं जो अलग-अलग भाषाओं अलग-अलग
संस्कृतियों अथवा अलग-अलग परिवेश से होते हैं
ऐसे बालकों को शिक्षा देना अध्यापक के लिए
प्रारम्भ में चुनौतीपूर्ण होता है।

लेकिन बाद में अध्यापक बालक की भाषा उनकी संस्कृत का प्रयोग संसाधन के रूप में करने लगता है और बालक की भाषा विकास के क्रम को आगे बढ़ाता है।

① बहुभाषिक बाला:-

- * बहुभाषिक बाला ऐसी बाला होती है जहाँ अलग-अलग भाषाओं को जानने वाले बाल होते।
- * अध्यापक को बालक की भाषा का सम्मान करना चाहिए। इससे उनमें हीन भावना नहीं आरम्भ होगी।
- * बालक में सीखने की शक्ति जितनी होती है, वह एक दूसरे की भाषा सीखने में मदद करता है।
- * अध्यापक को बालक के जितना भी संभव हो सके बालक के रूप में प्रयोग करना चाहिए।
- * बालक को उनकी मातृ भाषा में कविताएँ तथा कहानियाँ के कहने के अवसर उपलब्ध कराना चाहिए।
- * यह एक संसाधन होता है लेकिन प्रारम्भ में अध्यापक के लिए मुश्किल होता है।
- * बहुभाषिकता एक समाधान है इसमें हम किसी मुद्दे पर अलग-अलग दृष्टिकोण से विचार कर पाते हैं और ऐसे समाधान पर पहुँचने का प्रयास कर पाते हैं जो अन्त में लोगों के लिए लोभक बनते हैं।
- * बहुभाषिक बाला वातावरण पर अनुकूल प्रभाव डालता है।
- * बहुभाषिक बाला प्रारम्भ में प्रतिकूल होती है लेकिन बाद में अध्यापक बहुभाषिक बाला का प्रयोग

कक्षा के अनुक्रम कर लेता है।

* बहुभाषिक कक्षा के द्वातों को अध्यापन करा रहे शिक्षक को शिक्षण सूत्रों, शिक्षण विधियों, शिक्षण सिद्धान्तों तथा सहपाठगामों क्रियाओं का ज्ञान होना चाहिए। इससे वह द्वातों को एक दूसरे की भाषा समझने में हेतु उनके अन्दर रुचि पैदा कर सकें जिससे एक दूसरे की भाषा को वास्तव सहजता से लेंगे और सीखेंगे।

व्यवसायिक कक्षा:

* यह ऐसी कक्षा होती है जहाँ ~~कई~~ संस्कृतियों के द्वातों में द्वातों के बीच सीखाने और सुरक्षित रखना चुनौतीपूर्ण होता है।

* वच्चे कक्षा में अपनी संस्कृति को प्रदर्शित कर लेकर प्रवेश करते हैं इसलिये विभिन्न आयोजनों कार्यक्रमों द्वारा विभिन्न संस्कृतियों का सम्मान करना चाहिए तथा द्वातों को ऐसे आयोजनों में सम्मिलित करके एक दूसरे के संस्कृति के प्रति रुचि पैदा करना चाहिए।

* सभी बच्चे को समान रूप से सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित होना चाहिए।

* द्वातों के सांस्कृतिक रीति रीवाजों के सुरक्षित करने हेतु प्रत्येक द्वात के संस्कृति को आयोजनों में सम्मिलित करना चाहिए। भले ही वह द्वात अल्प संख्या में हो।

* यदि अध्यापक किसी द्वात के संस्कृति को नजरअन्दा करता है तो वास्तव में हीन भावना का संचार होता है द्वात एक दूसरे की संस्कृति को ज्ञान समझ हेतु उन्हें अध्यापक-2 अवसर उपलब्ध कराना चाहिए।

समावेशी कक्षा

सम्मिलित है:-

- * मन्द बुद्धि + अल्प बुद्धि + सृजनशील + औसत बालक + निम्न सामता युक्त बालक + उच्च सामता युक्त बालक + पश्चिमाशाली बालक + निधन बालक + वंचित बालक + अहर्षिता आदि समावेशी कक्षा के अन्तर्गत आरहेगे।
- * अन्धे बालक + शूंगे बालक + बहरे बालक के भी आरहेगे।
- * समावेशी कक्षा में निम्न को सम्मिलित नहीं किया जाता है

पूर्ण रूप से अन्धे + पूर्ण रूप से शूंगे + पूर्ण रूप से बहरे

- * दातों को एक दूसरे की आँखों सीखने हेतु उनके अन्दर रुचि पैदा करना बाह्य शिक्षक को भी अधिक से अधिक गायराने सीखनी चाहिए।

उच्च श्रेष्ठ, निम्न श्रेष्ठ, औसत श्रेष्ठ के बालक एक साथ अध्ययन करते हैं अतः अध्यापक को समावेशी कक्षा का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

अध्यापक को गीत संगीत खेल कहानी कविताओं अर्थात् संस्थाठगामी क्रियाओं का ज्ञान होना चाहिए।

एक ही परिवेश पसन्द बालकों को अधिक से अधिक सामूहिक गतिविधियों में सम्मिलित करना चाहिए देखने सुनने की क्षमता भिन्न बालकों में कम होती है ऐसे बालकों को शायद इश्वर समाग्री के माध्यम से भाषा सीखने में दातों की मदद करनी चाहिए।

ऐसे बालक जो बहरे हैं अर्थात् कम सुन पाते हैं उन्हें अगली पंक्ति में बोलना चाहिए तथा ऐसे दातों को जो देखने सुनने में समस्या हो और पहली बार

अध्यापक को पता चले ऐसे हातों हेतु सर्वप्रथम डॉक्टर से सलह लेने हेतु माता-पिता को कहना चाहिये।

* समावेसी कक्षा में अध्ययन कर रहे हातों को अलग से अथवा विशेष रूप से किसी हात की मदद नहीं करनी चाहिए बल्कि वह बिलगाई ही क्यों न हो क्योंकि जब अलग से सहयोग किया जाता है तो बालकों में अपने असमता को लेकर हीन भावना आ जाती है।

* सह विद्या को बढ़ावा देना चाहिये। अर्थात् बालक को साथ में सरलता से भाषा विकास कर सकें, ऐसा प्रयास अध्यापक को करना चाहिये।

* अध्यापक को सिंगल्वर्क को अवधारणा को बताना चाहिये।

* व्यक्ति की अर्थात् जो कभी विद्यालय आरंभ ही नहीं उन्हें समावेसी कक्षा के माध्यम से भाषा विकास के मुख्य धारा में जोड़ना चाहिये।

भाषा की कक्षा में शिक्षक की भूमिका

- * भाषा के शिक्षण की उद्दीपक कौशल का भाग होना है - चाहिए। अर्थात् शरीर का हाव-भाव प्रयोग किए जा रहे शब्दों से पैदा आती हो।
- * भाषा शिक्षक को ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जिससे बालक को भाषा सीखने के अधिक से अधिक अवसर मिल सकें अर्थात् अध्यापक को भाषा का वातावरण बनाने में दक्ष होना चाहिए।
- * अध्यापक को प्रयास करना चाहिए कि बालक भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग कर सकें। बालक को अपनी मातृभाषा प्रयोग करने के अवसर देने चाहिए।
- * अध्यापक को सहपाठीय भी क्रियाओं e.g. निबंध प्रतिष्ठा, गीत कविता खेल आदि का भाग होना के साथ-2 इनमें रुचि भी होनी चाहिए।
- * भाषा शिक्षक को जयपट्ट कविता आदि कोपने में भी दक्ष होना चाहिए।
- * भाषा शिक्षक को अनुकरण द्वारा सीखने के सिद्धान्त का प्रयोग करने में दक्ष होना चाहिए।
- * भाषा शिक्षक को साहित्यप्रेमी व रचनाकार होना चाहिए।
- * भाषा शिक्षक को अनुपयुक्त होना चाहिए ताकि वह नए-नए तथ्यों से बालक को अवगत करा सकें।

* भाषा शिक्षक को चारों ओरों का अच्छा ज्ञान होना चाहिए।

* शिक्षक को शुद्ध बोलना, शुद्ध लिखना चाहिए। उसे वह प्राथमिक कक्षा में बच्चों न पढ़ा रहा हो।

* भाषा शिक्षक को मनोवैहिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए।

* भाषा शिक्षक को व्यवहारिक भाषा का प्रयोग करने में दक्ष होना चाहिए।

* भाषा शिक्षक को यह प्रयास करना चाहिए जीवित अधिक से अधिक भाषाओं पर विचार करना।

* भाषा शिक्षक को शिक्षण स्तरों, शिक्षण विधियों का ज्ञान होना चाहिए।

भाषा विकास के सिद्धान्त

(1) अनुकरण का सिद्धान्त :-

* इस सिद्धान्त को मानने वालों में प्रमुख नाम पावलाव पेलेनदारन, शार्पी, चैम्पनीज आदि हैं।

* अनुकरण के सिद्धान्त के तहत बच्चों में भाषा विकास नकल कर के होता है।

* तथ्यों के समक्ष भाषा का सत्य प्रस्तुत किया जाता है बालक बाल्यवस्था में सहजता से अनुकरण करते हुए सीख लेता है।

* भाषा विकास सर्वाधिक अनुकरण के द्वारा होता है।

(2) क्रियाशीलता का सिद्धान्त :-

बालको को क्रियाशील रखना चाहिए, यह समान्य रूप से देखा जाता है कि बालक जिज्ञासु होते हैं, जिज्ञासा का प्रयोग करते हैं जब बालक को नया-नया तथ्य को बताया जाता है तो धीरे बालक क्रियाशील हो कर सीखने लगता है अर्थात् भाषा का विकास क्रियाशील हुए बिना सम्भव नहीं है।

(3) अभ्यास का सिद्धान्त :- थार्नेडरक का यह सिद्धान्त उनके अनुसार बच्चों में भाषा का विकास सर्वाधिक तब होता है जब अधिक से अधिक बालक भाषा का प्रयोग स्वयं करते हैं। बच्चे मिलाना

अभ्यास करेंगे, उतनी ही तीव्रता से भाषा का विकास होगा।

(4) परिपक्वता का सिद्धांत :- बालक धीरे-2 परिपक्व होते हैं।
अर्थात् मानसिक व शारीरिक रूप से
उनमें विकास होता है।

कभी-2 कुछ बालक जल्दी परिपक्व होते हैं
उनमें भाषा का विकास तीव्र गति से होता है और
कुछ बालक धीरे गति से होते हैं अर्थात् विकास
सामान्य गति से होता है।

(5) सहचर्य / अनुबन्धन का सिद्धांत :- भाषा का विकास अमूर्त
रूप में होता है धीरे-धीरे
बच्चों को मूर्त रूप दिखाकर अमूर्त से सहचर्य स्थापित
किया जाता है, इसी को सहचर्य का सिद्धांत कहते हैं।
यह सिद्धान्त स्पष्ट करता है कि बालक में भाषा
विकास करने के लिए कोई वस्तु दिखाकर उसमें
धारे में बताया जाता है।

फिर कभी-कभी बालक जब
उस वस्तु को देखता है तो अनुबन्धन स्थापित कर लेता
है फिर धीरे-धीरे भाषा का विकास होता है।

(6) स्वयं का सिद्धांत :-

(7) प्रेरणा का सिद्धांत :-

(8) वास्तविक जीवन से जीने का सिद्धांत :-

योजना का सिद्धांत:-

→ Selection (चयन)

→ Devision (बादना)

→ Revision (पुनः अवलोकन)

भाषा शिक्षण व कौशल

* बालक सर्वप्रथम सुनता है, तत्पश्चात् बोलना शुरू करता है। तत्पश्चात् पढ़ता है। और अन्त में देखा प्रारम्भ करता है। अर्थात् चारों कौशलों में सर्वप्रथम कौशल सुनना है। कि अन्तिम कौशल लिखना है।

* अर्थात् उन चारों कौशलों का क्रमशः विकास होता है। सुनना, बोलना, पढ़ना लिखना।

* यदि प्रश्न यह किया जाए कि अभिव्यक्तात्मक कौशल कौन होते हैं। अर्थात् इन कौशलों का प्रयोग करके हम अपने भाव व विचारों को व्यक्त करते हैं। तो अभिव्यक्तात्मक का उत्तर होगा — बोलना लिखना इनके द्वारा हम अपने भाव व विचारों को व्यक्त करते हैं।

* यदि प्रश्न यह किया जाए कि गृहात्मक कौशल कौन से हैं। अर्थात् इन कौशलों के द्वारा हम तथ्यों को ग्रहण करते हैं (सुनना - पढ़ना) (Receptive Skill - गृहात्मक कौशल)

* यदि प्रश्न यह किया जाए कि Input कौशल कौन से हैं। तो इसका उत्तर भी ग्रहण करने से ही सम्बन्धित है।
जैसे - सुनना - पढ़ना

* यदि प्रश्न यह किया जाए कि Output कौशल कौन से हैं। तो इसमें Output का तात्पर्य अभिव्यक्त करने से है जैसे - बोलना - लिखना

* यदि यह प्रश्न किया जाय कि बोलना का कौशल क्या है? कोई सुन रहा है तो कोई बोल रहा है। इस प्रकार बोलना पूरक-कौशल है।

* प्राचीन काल में किस कौशल पर कम महत्व दिया जाता था?

Ans- लिखना

* सर्वाधिक महत्व बोलने पर दिया जाता था।

* मोहन बिखते समय "पापा" पुस्तक पढ़ते हैं। को पापा पढ़ते हैं। तथा माया बैठ कर रो रही हैं। को माया से रो रही हैं। लिखता है। तो भाषा के शिक्षक के रूप में आप की क्या प्रतिक्रिया होगी?

* ऐसी दशा में मोहन नियमों का अति सामान्यीकरण कर रहा है। अध्यापक स्वयं कई बार ऐसे वाक्यों का प्रयोग करके लक्ष्य को स्पष्ट करने का प्रयास करेगा।

* लिखना कौशल:- बच्चों में लिखने के कौशल का विकास करने के लिए अध्यापक को स्वयं लिख कर दालों के समस्त नमूना पेश करना चाहिए। जिससे दालों को लिखने के कौशल का विकास होगा व वर्तनी का अच्छा ज्ञान होगा।

* दालों के अनुभवों को लिखने हेतु उन्हें प्रेरित करना चाहिए।

* शिक्षक को व्यापक रूप का कार्य करते समय बोल कर लिखना चाहिए। क्योंकि शिक्षक की ज़रूरत

समावेशी कसा होती हैं।

⇒ इसमें न्यून दृष्टि वाले बालक भी बैठे रहते हैं तथा कम सुनने वाले बालक भी बैठे रहते हैं।

⇒ शिक्षक को व्यामर्श करते समय उद्यमपूर्णता के बायी ओर 45% सिस्सिका डिग्री का कोण बनाते हुए विधाना चाहिए।

⇒ इसमें लेखन की गति एवं लिखकर का अनुकरण द्वारा अच्छे तरह से कर लेना।

⇒ कौशल के विकास के दौरान सुहृता, क्रमबद्धता, सुस्पष्ट सुसम्बद्धता पर ध्यान देना चाहिए।

⇒ अशुद्धता उच्चारण अशुद्धता वर्तनी के लिए जिम्मेदार होता है।

सायबर्न मॉडल के अनुसार :- शुद्ध उच्चारण शुद्ध वर्तनी लिए अत्यन्त आवश्यक है अर्थात् लिखने के कौशल सीखने सम्बंध बनाने के कौशल से हैं।

पढ़ना कौशल

प्रथम कौशल का प्रारम्भ अधीकृत सामग्री से करना चाहिए।

अर्थ - पढ़ते समय नेत्र व पुस्तक के बीच की दूरी 25 cm होनी चाहिए।

पढ़ते समय नेत्र व पुस्तक के मध्य का कोण का होना चाहिए।

पढ़ने के दो आकार होते हैं -

(1) वाचन मुद्रा या पठन मुद्रा

(2) वाचन शैली या पठन शैली

(1) वाचन मुद्रा या पठन मुद्रा :- जब पढ़ने के समय हाथों का व्यवहार का प्रयोग करके पठन क्रिया सम्पन्न किया जाता है तो इसे पठन मुद्रा या वाचन मुद्रा कहते हैं, जैसे - खड़े होकर पढ़ना, घड़े होकर पढ़ना, बैठकर पढ़ना

(2) वाचन शैली या पठन शैली :- जब पढ़ने के समय ध्वनियों के उचित इस्तेमाल का प्रयोग करके पठन क्रिया सम्पन्न की जाती है तो इसे वाचन शैली या पठन शैली कहते हैं जैसे तेजी से पढ़ना, मंद से पढ़ना, धीरे से पढ़ना।

पठन के विधियाँ

① मौखिक पठन (अस्वर वाचन)

② मौन पठन (साइलेंट रीडिंग)

① मौखिक पठन :- जब ध्वनियों के साथ मौखिक रूप से उच्चारण करके पठन क्रिया सम्पन्न की जाती है तो इसे ही मौखिक पठन कहते हैं प्रारम्भिक कक्षा के बच्चों के लिए मौखिक पठन सबसे उपयुक्त माना जाता है क्योंकि यह बच्चों के रुचियों के अनुरूप होता है।

विकास तीव्र गति से होता है इसलिये प्रारम्भ में बालक अधिक आरिधर स्वभाव वाले होते हैं। अर्थात् प्रारम्भ में बालक का ध्यान एकाग्र नहीं हो पाता है इसलिये मौन पठन की अपेक्षा मौखिक पठन प्रारम्भिक कक्षा के लिए

⇒ मौखिक पठन की प्रक्रिया के दो रूपों में भाग लेती हैं -

- ① सामूहिक मौखिक पठन
- ② व्यक्तिगत मौखिक पठन

सब प्रश्न यह उठता है कि सामूहिक मौखिक पठन या व्यक्तिगत मौखिक पठन

⇒ बच्चे प्रारम्भ में अपने विचारों की अभिव्यक्ति करने में या पढ़ने की क्रिया सम्पन्न करने में व्यस्त रहते हैं। उनमें प्रारम्भिक रूप पढ़ने की कला बनाने के लिए उन्हें सामूहिक मौखिक पठन पर बल देना चाहिए।

⇒ सामूहिक रूप से जब बच्चे पढ़ते हैं तो उनकी शिक्षा हो जाती है और उसमें बढते की आदत बन जाती है।

⇒ सामूहिक मौखिक पठन के दमिंदार होते हैं तमाम बच्चे रहते हैं जिनका निवारण व्यक्तिगत मौखिक पठन के द्वारा सुलझाया जा सकता है।

मौन पठन

जब बच्चे मौखिक रूप से ध्वनियों का उच्चारण क्रिया बिना ही पठन क्रिया सम्पन्न की जाती है तो इसे मौन पठन कहते हैं।

प्रारम्भिक स्तर के बच्चे इसमें रुचित नहीं लेते हैं।

मौन पठन दो प्रकार के होते हैं -

- (1) द्रुत या तीव्र मौन पठन
- (2) समीक्षात्मक मौन पठन

तीव्र मौन पठन की क्रिया तब सम्पन्न की जाती है
जब मनुष्य मुख्य विचार, सारांश अथवा शीर्षक का पता
लगाना होता है।

तीव्र या द्रुत पठन से समय की बचत भी होती है। लेकिन
जब व्याकरणात्मक व्याख्या करते हुए आसानी से
तथ्य को समझते हुए पठन क्रिया सम्पन्न की जाती
है तो इसे ही समीक्षात्मक मौन पठन कहते हैं।

समीक्षात्मक मौन पठन में समय अधिक लगता है।

समीक्षात्मक मौन पठन को गहन मौन पठन भी कहते हैं।

कक्षा की दृष्टि से पठन के दो भेद हैं:-

① आदर्श वाचन:- जब शिक्षक के द्वारा उचित आरोप अवरोप
का प्रयोग करके पढ़ने की क्रिया सम्पन्न
करायी जाती है तो इसे पठन को आदर्शवाचन कहते हैं।

प्रश्न यह उठता है कि आदर्शवाचन शिक्षक द्वारा कराया
जाता है आदर्शवाचन बात के द्वारा भी कराया जाता है।

* साथ ही साथ ऐसे दातों को द्वारा कराया जाता है जिसके
उच्चारण में शुद्धता एवं स्पष्टता है।

* आदर्श वाचन करने के परिधान कठिन शब्दावलि को
व्यामपट्ट पर लिख देना चाहिए और ऐसे शब्दावलि
का उच्चारण भी कराना चाहिए।

हाथ की कठिनार्थ का निवारण आदर्शवाचन के पश्चात्
पष्ट किया जाता है।

(ii) अनुकरण वाचन - जब शिक्षक के द्वारा आदर्श वाचन की
क्रिया सम्पन्न की जाती है तो उसके प
बच्चों के द्वारा भी पठन क्रिया भी करायी जाती है
ही अनुकरण वाचन कहते हैं। हाथों के आरखी
कठिनार्थ का निवारण अनुकरण वाचन के बाद किया
जाता है क्योंकि कठिनार्थ का पठन हमें बच्चों के पठन
के बाद चल जाता है।

Q. माथा पढ़ते समय शब्दों का दोहराकर पढ़ती है तो र
शिक्षक के रूप में आप क्या समझेंगे?
Ans - एक शिक्षक के रूप में यही समझेंगे कि वह क
समझ - समझकर पढ़ना चाहिये।

सुनना कौशल

* सुनना कौशल से ही अन्य कौशल का विकास होता है। इसलिए सुनना कौशल को मूल आधार कौशल भी कहते हैं।

* यह सभी कौशल में सबसे महत्वपूर्ण होता है इसी शारम्भिक कौशल भी ऊँचा आता है।

* यदि ध्यान यह किया जाए कि सुनना कौशल का प्रत्येक कौशल कौन है तो इसका उत्तर में बोलना कौशल आरम्भ।

सुनना $\rightarrow$ बोलना

* प्राचीन काल में सबसे महत्वपूर्ण कौशल सुनना कौशल ही था क्योंकि प्राचीन काल में मत्तों आदि को सुन कर ही याद किया जाता था तथा बोलकर उच्चरित किया जाता था।

* इसी में सुनना कौशल का विकास हो सके इसी अध्येता को शिक्षण विधियों का सहारा लेना चाहिए।

* अध्येता को वाद विवाद प्रतियोगिता कहानी कविता आदि के माध्यम से अधिक से अधिक हाथों को अवसर उपलब्ध कराने चाहिए ताकि हाथों में सुनना कौशल का विकास हो सके।

* इन हातो की जावण शक्ति कम है उन्हें
से समझ लेने हेतु कहना चाहिए।

* तत्कालिक सहायता के रूप में ऐसे हातो को कक्षा
की अग्रिम पक्ति में बैठाना चाहिए।
अध्यापक को भी शुद्ध स्पष्ट एवं समावशाली
तरीके से उच्चारण करना चाहिए क्योंकि बालक
अनुकरण से सर्वाधिक सीखते हैं।

बोलना कौशल

* हातो में बोलना कौशल का विकास हो सके इस हेतु
प्रारम्भ को हातो को उनकी मातृ भाषा में बोलने
के अवसर प्रदान करने चाहिए।

* अध्यापक को मातृ और विचारों को अभिव्यक्त करते
समय स्वयं भी शुद्ध व स्पष्ट भाषा का प्रयोग
इसका प्रयोजन रखना चाहिए।

* बोलना कौशल का विकास करने हेतु हातो को बात
कहावियाँ बतायी जानी चाहिए तत्परन्ततः हातो से
भी बोलने के लिए कहा जाना चाहिए।

* हातो को चित्र दिखाकर चित्र से सम्बन्धित
तथ्यों को बोलने हेतु कहा जाना चाहिए।

* बोलना कौशल हेतु सबसे महत्वपूर्ण भाषिक वातावरण
है शिक्षक को चाहिए कि हातो के पूर्व अनु
से सम्बन्धित तथ्यों को हात वाले इस हेतु उन्हें

अधिक से अधिक उनके अनुभव के विषय में बोलने
हेतु कहाँ जाना चाहिए।

पाठ्यपुस्तक की विशेषताएँ

- * प्रारम्भिक कक्षा के छात्रों हेतु पाठ्यपुस्तक सरल व सुगम होनी चाहिए।
- * पाठ्यपुस्तक में ही कई विषय-वस्तु बालक के वातावरण वर परिवेश आदि से जुड़ी होनी चाहिए।
- * पाठ्य पुस्तक में बाल साहित्य का अधिक से अधिक प्रयोग होना चाहिए।
- * पुस्तक में दिए गए अभ्यास कार्य विभिन्नताओं से युक्त हो (सरल-कठिन)।
- * प्रारम्भिक उम्र के बालकों के पुस्तक का कवर फेज रंगीन एवं चित्रात्मक होना चाहिए इससे बालक में रुचि पैदा होती है। इसलिए यह सबसे कम महत्व की विशेषता होती है।
- * पाठ्य पुस्तक में दिया गया लक्ष्य अध्यापक एवं छात्र को सीख देना वाला होना चाहिए।
- * पाठ्य पुस्तक में भाव चित्रात्मक प्रयोग अधिक से अधिक होनी चाहिए।

11. पाठ्य पुस्तक के सन्दर्भ में सबसे कम महत्वपूर्ण है

- | | |
|---------------------------|---------------------------|
| (1) अभ्यास की विविधता | (3) बाल साहित्य का प्रयोग |
| (2) उद्देश्य पूर्ण लक्ष्य | (4) पुस्तक का कवर फेज |

* निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु
हालांकि सन्दर्भ में व उनकी समस्याओं के अनुरूप
अनुरूप होनी चाहिए।

* माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार विद्यालय का सम्पूर्ण
जीवन पाठ्य क्रम के अन्तर्गत आता है अर्थात्
कक्षा कक्षा से लेकर विद्यालय में आयोजित होने
वाली सभी योजनाएँ, क्रियाकलाप व जो बच्चों
के हित से जुड़े होते हैं पाठ्यक्रम के अन्तर्गत
आते हैं।

* पाठ्यक्रम केवल विद्यालय तक ही सीमित न रहे बल्कि
उद्देश्य बालक के विकास में आने वाले वै समस्त
वातावरण जो बालक के जीवन को प्रभावित करते हैं।

व्याकरण से सम्बन्धित शिक्षण विधियाँ

① आगमन विधि: इस विधि के तहत अध्यापक सर्वप्रथम उदाहरण देता है तत्पश्चात् नियमों को बताकर समाजीकरण करता है यह मनोवैज्ञानिक विधि होती है। यह मनोवैज्ञानिक विज्ञान जैसे का अनुकरण करती है जैसे स्नात से अस्नात की ओर, सरल से कठिन की ओर, स्थूल से सूक्ष्म की ओर आदि। व्याकरण पढ़ाने की सबसे उत्तम विधि आगमन विधि ही होती है इस विधि का उपयोग तब के है जब समय पर्याप्त हो।

② निगमन विधि: निगमन विधि के तहत सर्वप्रथम सिद्धम बताया जाते हैं अर्थात् समान्यीकरण किया जाता है तत्पश्चात् उदा० के मा० से तदर्थ के स्पष्ट किया जाता है

* यह मनोवैज्ञानिक विधि है।

* इस विधि के तहत स्टन्ट पणाली पर जोर दिया जाता है।

* NCF 2005 में शिक्षा व्यवस्था को स्टन्ट पणाली बनाने की बात कही गई है।

* यदि प्रश्न यह किया जाए कि आगमन विधि विधि की विरोधी विधि है या सहायक विधि तो इससे उत्तर में यह कहा जायगा कि यह सहायक विधि है क्योंकि भाषा के शिक्षक को इस विधि के बाद निगमन विधि का उपयोग करना

3) भाषा संसर्ग विधि:-

* इस विधि के तहत बालक व्याकरण के नियमों को अपने गुरु अथवा अध्यापक के सम्पर्क में रहकर सीखता है।

* यह व्याकरण सीखने की सबसे उपयुक्त विधि है।

(4) परम्परागत विधि:-

* व्याकरण पढ़ाने की यह सबसे प्राचीन विधि है।

* इस विधि के द्वारा व्याकरण शिक्षण व अनुवाद पर विशेष बल दिया जाता है।

(अनुवाद)

* इसके द्वारा मातृ भाषा से दूसरी भाषा को अनुवाद के माध्यम से सिखाया जाता है अर्थात् इसमें मातृ भाषा की महत्त्वपूर्ण होती है।

(5) प्रत्यक्ष विधि (Direct Method)

* प्रत्यक्ष विधि में मातृ भाषा का प्रयोग नहीं करते हैं अर्थात् मातृ भाषा के सहयोग के बिना ही जब कोई भाषा सिखायी जाती है तो इसे प्रत्यक्ष विधि कहते हैं इसे विदेशी विधि भी कहते हैं। इसके विधि की उत्पत्ति 1801 ई० में जर्मनी में हुआ था।

(6) अन्वय विधि:-

* इस विधि का प्रयोग पद्य शिक्षण में किया जाता है।

* अनुवाद करने से पूर्व जब शब्दों को हिन्दी के वाक्य क्रम के अनुसार अर्थीर करी, कर्म किया के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है तो इस विधि को अन्वय विधि कहते हैं।

कहानी लयन विधि:-

* कहानी कहते हुए भी व्याकरण के नियमों का पालन करना तथा व्याकरण के नियमों का पालन कराना इस विधि का उद्देश्य होता है।

* इससे छलपना व लुप्त शक्ति का विकास होता है।

नाट्यशाला अभिनय विधि:-

जब अभिनय अभिनय के द्वारा व्याकरणिक नियमों का अनुकरण करते हुए हात हाताओं से कुछ उच्चारण करने हेतु प्रेरित किया जाता है अर्थात् व्याकरणिक नियमों को ध्यान रखते हुए मंचन कराया जाता है तो वाक्य व्याकरण नियमों का शुद्ध प्रयोग करने हेतु प्रेरित होता है।

मूल्यांकन एवं मापन

मूल्यांकन:- बालक के व्यवहार में हुए परिवर्तन का आकलन ही मूल्यांकन होता है। अर्थात् बालक के व्यवहार में हुए परिवर्तन व गुण दोषों का व्यवस्थित आकलन ही मूल्यांकन है।

मूल्यांकन की प्रक्रिया मापन की प्रक्रिया के पर्याप्त की जाती है।

अर्थात् जबकि आकलन मूल्यांकन व मापन दोनों के पहले किया जा सकता है।

कुछ आवश्यक बिन्दु मूल्यांकन के

* मापन की क्रिया के पर्याप्त बच्चों के जिन व्यक्तित्व, शक्तियों, रुचियों, योग्यताओं, स्तियादि की व्याख्या की जाती है। अर्थात् बालकों को हो रही समस्याओं के कारणों का पता लगाना एवं उपचारोत्तम शिक्षण कराना मूल्यांकन के अन्तर्गत आते हैं।

* मूल्यांकन की प्रक्रिया के पर्याप्त ही बच्चों के लिए ऐसी योजना बनायी जाती है जिससे बच्चों का हित सुरक्षित हो सके। अर्थात् बच्चों के कम बहू विकास की रक्त रूप रेखा तैयार की जाती है जिसे पाठ्यक्रमियों कहा जाता है।

* मूल्यांकन के तहत बालक के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्लियात्मक विकास की जान जाँच की जाती है।

मूल्यांकन
में
परीक्षण

ज्ञानात्मक — जानकारी, सूचना, ज्ञान
भावत्मक — प्रेम, समझ, अनुभूति
क्रियात्मक — प्रयोग, समायोजन, क्रियान्वयन

(i) ज्ञानात्मक परीक्षण:- ज्ञानात्मक परीक्षण के तहत सम्बन्धित विषय में बालक के ज्ञान, जानकारी, सूचना होने का आकलन किया जाता है। सम्बन्धित विषय हार् किस सीमा तक निपुण है।

(ii) भावत्मक परीक्षण:- मूल्यांकन के तहत बालक के भावात्मक पक्ष का भी परीक्षण किया जाता है। उसके द्वारा किसी वस्तु के प्रति समझ या किसी के प्रति अनुभूति/ सहानुभूति/ प्रेम के भाव को व्यक्त करता है।

(iii) क्रियात्मक परीक्षण:- मूल्यांकन के तहत बालक के क्रियात्मक पक्ष का भी परीक्षण किया जाता है उसकी यह परख की जाती है कि बालक को सम्बन्धित विषय का किस स्तर तक प्रयोग करने में सक्षम है। अर्थात् यहाँ बालक के प्रयोग, समायोजन, क्रियान्वयन की परख की जाती है।

विश्वसनीयता तथा वैधता

* मूल्यांकन के तहत विश्वसनीयता तथा वैधता की परख की जाती है। अर्थात् बालक का किया गया विश्वसनीय है वैध है अथवा नहीं यह महत्वपूर्ण होता है।

* जब कोई मूल्यांकन बार-बार एक ही आकलन को स्पष्ट करें तो इसी मूल्यांकन की विश्वसनीयता कहेंगे।

* बेधता के तहत किसी निश्चित रूप रेखा पर होना या न होना सुनिश्चित किया जाता है जैसे - यदि हम पढ़ने कोशिल का मूल्यांकन कर रहे हैं साथ में लिखना कोशिल का भी मूल्यांकन करने लगे होंगे मूल्यांकन अवैध होगा। क्योंकि वैध मूल्यांकन निश्चित उद्देश्यों की व्याख्या करता है।

मापन :- बालक के द्वारा उपयोग में परिवर्तन का मातात्मक अथवा अनात्मक स्फूर्तिकरण दिया जाए तो उसे ही मापन कहते हैं।

* इसके द्वारा बालक के व्यक्तित्वगत स्वभाव, समताओं, विभिन्नताओं व उपयोग में हुए परिवर्तन का मापन किया जाता है।

* मापन की क्रिया को अच्छी परीक्षा के माध्यम से ही सम्पन्न कराया जा सकता है।

* मापन के लिए अति, लघु, विस्तृत कुलरीय तथा निष्कल्यात्मक स्तर के प्रश्न अधिक उपयोगी होते हैं। बहुविकल्पीय प्रश्न सबसे कम महत्व पूर्ण होते हैं क्योंकि यहाँ विश्वसनीयता की कमी होती है।